Dr. Md Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
Ara.

Subject - Philosophy
Class - B.A, Part-III (Hons)
Paper - V

अशुभ की समस्या (दूसरा भाग)

Problem of Evil (Second Part)

⟹ अशुभ की समस्या का विकास →

जब हम अशुभ की समस्या पर विचार करते हैं तो पाते हैं तो पाते हैं कि अशुभ प्राचीन काल के लोगों के लिए समस्या नहीं थी। उस समय के लोग दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में कुछ ~~सकार~~ इस प्रकार उलझे रहते थे कि सैद्धान्तिक विवेचन के लिए जैसे ~~BK~~ उनके पास कोई समय ही नहीं था। उस काल के धर्म पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि जिस समय प्राणवाद (Spiritism) में लोगों का विश्वास था उस समय लोगों को शुभ और अशुभ के विचार स्पष्ट हो गये थे परन्तु ~~BK~~ उनके समक्ष अशुभ कोई समस्या नहीं थी। उनका विश्वास था कि विश्व में अनेकानेक जीव (Spirits) हैं और उनमें से कुछ दयालु और नेक है, परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो क्रूर और निर्दयी हैं। अच्छे जीव (Spirits) लोगों को शुभ करते हैं और बुरे जीव लोगों का अशुभ करते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि उस

classmate
Date 16/04/20
Page 2

काल के लोगों के पास अशुभ का एक अच्छी एवं स्पष्ट व्याख्या थी।

फिर जब हम टोटमवाद (Totemism) फेटिशवाद (Fetishism) तथा पूर्वज-आराधना में विश्वास करने वालों की ओर ध्यान देते हैं तो पाते हैं कि उन लोगों के लिए भी अशुभ कोई समस्या नहीं थी। इसका कारण यह है कि ये लोग भी जीव की बहुलता में विश्वास करते थे, जिनमें से कुछ जीव नेक स्वभाव वाले थे और कुछ स्वभाव वाले थे। अतः शुभ की उत्पत्ति का कारण वे नेक स्वभाव वाले जीव को मानते थे और अशुभ की उत्पत्ति का कारण दुष्ट स्वभाव वाले जीव को मानते ~~है~~ थे।

इसके बाद जब हम अनेकेश्वरवादी धार्मिक विचार धारा (Polytheistic Religious Idea) पर विचार करते है तो पाते है यहाँ भी ~~यह~~ अशुभ कोई समस्या नहीं थी क्योंकि अशुभ की उत्पत्ति का कारण भी वे लोग (अनेकेश्वरवादी) दुष्ट देवताओं को ही मानते है।

शेष अगले भाग में